[Vol-3, Issue-2, July-September 2025]

International Journal of Science and Social Science Research [IJSSSR] ISSN: 2583-7877

# ट्रम्प का टैरिफ और भारत की ऊर्जा सुरक्षा: चुनौतियाँ एवं विकल्प

**डॉ मदन मोहन शुक्ला**

सहायक आचार्य, रक्षा एवं स्रातजिक अध्ययन विभाग हिन्दू कॉलेज मुरादाबाद, उ०प्र०, भारत

**Author Email**: srimmshukla@gmail.com

**सारांश**— वर्तमान वैश्विक परिदृश्यों मे भू-राजनीतिक गतिशीलता को ध्यान मे रखते हुए भारत की ऊर्जा सुरक्षा को बनाए रखने के लिए रूस से तेल आयात कर रहा था। लेकिन अब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा भारत पर 25 % का टैरिफ लगाये जाने की बात सामने आ रही है। अमेरिका के इस कदम का भारत की ऊर्जा सुरक्षा पर व्यापक एवं बहुआयामी प्रभाव पड़ेगा। ट्रम्प की टैरिफ नीतियों से पूरा विश्व आज बड़े आर्थिक संकट की ओर धीरे-धीरे अग्रसर हो रहा है। अब भारत भी उससे अछूता नहीं है। रूस-यूक्रेन संघर्ष के बीच रूस के साथ भारत के ऊर्जा एवं आर्थिक सम्बन्धों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से प्रेरित इस टैरिफ ने भारत और अमेरिका के द्विपक्षीय संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया है, जिससे दो दशकों से अधिक का बढ़ता व्यापार और सहयोग कम होता जा रहा है। अमेरिका की यह टैरिफ नीति न केवल भारतीय निर्यात-जैसे कि कपड़े, रत्न और गहने, ऑटो पार्ट्स और चमड़ा आदि को अमेरिकी बाजार में भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता को कम करने के उद्देश्य से प्रेरित है अपितु इससे भारत रूस से तेल खरीदने के अपने निर्णय की समीक्षा करेगा या अमेरिका के साथ अपने सम्बन्धों को लेकर पुनः समीक्षा करेगा इस बात को लेकर भारत और विश्व के कूटनीतिज्ञों मे चर्चा का विषय बन चुकी है।

अमेरिका की इस नीति से भारत की रणनीतिक ऊर्जा साझेदारी, विशेष रूप से रूस के हाइड्रोकार्बन पर निर्भरता, जो आज भारत के तेल आयात का 40% तक है , राजकोषीय घाटे और नीतिगत चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। ट्रम्प का टैरिफ न केवल भारतीय उपभोक्ताओं और आयातकों के लिए वर्तमान लागत को बढ़ाएगा, अपितु ऊर्जा सुरक्षा मे विविधता, सामर्थ्य और लचीलापन के भारत के व्यापक उद्देश्य के लिए भी संकट खड़ा करेगा। उक्त को ध्यान मे रखते हुए इस शोध पत्र को तीन भागों मे बांटा गया है। प्रथम भाग मे भारत की वर्तमान ऊर्जा सुरक्षा की वस्तुस्थिति का विश्लेषण किया गया है। द्वितीय भाग मे भारत की ऊर्जा सुरक्षा पर ट्रम्प की टैरिफ नीति का क्या प्रभाव पड़ेगा? इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास किया गया है। और तृतीय भाग मे भारत के पास इससे निपटने के लिए क्या संभव विकल्पों को खोजने का प्रयास किया गया है।

**कुंजिका शब्द**: अमेरिका, टैरिफ, भारत, ऊर्जा सुरक्षा, रूस

---

## 1. प्रस्तावना:

संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत के बीच संबंध, विशेष रूप से व्यापार और ऊर्जा के क्षेत्र में, 2025 में बढ़े हुए तनाव और रणनीतिक जटिलता के दौर में प्रवेश कर गए हैं। ट्रम्प प्रशासन ने यूक्रेन संघर्ष के आर्थिक परिणामों का सामना करने और रूस के साथ ऊर्जा व्यापार जारी रखने वाले राष्ट्रों को दंडित करने के अपने आत्मघाती निर्णय के कारण, भारतीय निर्यात की एक श्रृंखला पर टैरिफ लगाने और बढ़ाने की धमकी दी है। अर्थात अमेरिका कुल मिलाकर 50 % तक टैरिफ लगा सकता है। और यह तब हो रहा है जब दोनों पक्षों ने महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं, जैसे कि 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को दोगुना करके 500 अरब डॉलर करने के लिए "मिशन 500", और एक बहु-क्षेत्र द्विपक्षीय व्यापार समझौते के लिए बातचीत जारी है। अमेरिका का मानना है कि भारत रूस से तेल खरीद कर उसके द्वारा जारी युद्ध को अप्रत्यक्ष समर्थन दे रहा है। यद्यपि इसका वास्तविक पक्ष यह है कि भारत जैसे विकासशील और बृहद जनसंख्या वाले देश मे ऊर्जा आपूर्ति उसके अस्तित्व और विकास के लिए अति आवश्यक है। कदाचित यही कारण है कि भारत इसे सबसे प्रमुख राष्ट्रीय हित की श्रेणी मे रखता है। और संप्रभुता का अर्थ भी यही है कि भारत अपने राष्ट्रीय हितों कि आपूर्ति निर्बाध करता रहे।

विश्व के तीसरे सबसे बड़े तेल उपभोक्ता और आयातक भारत को अमेरिका के बढ़ते टैरिफ के साथ अपनी रणनीतिक स्वायत्तता के लिए अपनी आवश्यकताओं को संतुलित करने मे बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। आज भारत का सबसे बड़ा कच्चा तेल आपूर्तिकर्ता रूस बन चुका

है जो कि 2019 के पूर्व ईरान हुआ करता था। भारत आज अपने सकल कच्चे तेल के आयात का 40 % रूस से आयात कर रहा है।[1] भारत के यदि 2020-2021 के बाद रूस से तेल आयात के आंकड़ों पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद रूसी तेल आयात बढ़ा है। जहां 2020-21 मे भारत रूस से तेल 1.5 मिलियन टन आयात किया और 2021-22 मे लगभग 7 मिलियन टन आयात किया था। वहीं रूस यूक्रेन युद्ध के शुरू होने के बाद अर्थात 2022-23 मे भारत का रूस से तेल आयात बढ़कर 49.6 मिलियन टन हो गया। वहीं 2023-24 मे यह आंकड़ा लगभग 84.5 मिलियन टन और 2024-25 मे यह आयात 94.8 मिलियन टन हो गया। इसे चार्ट संख्या -1 के माध्यम से समझा जा सकता है।[2]

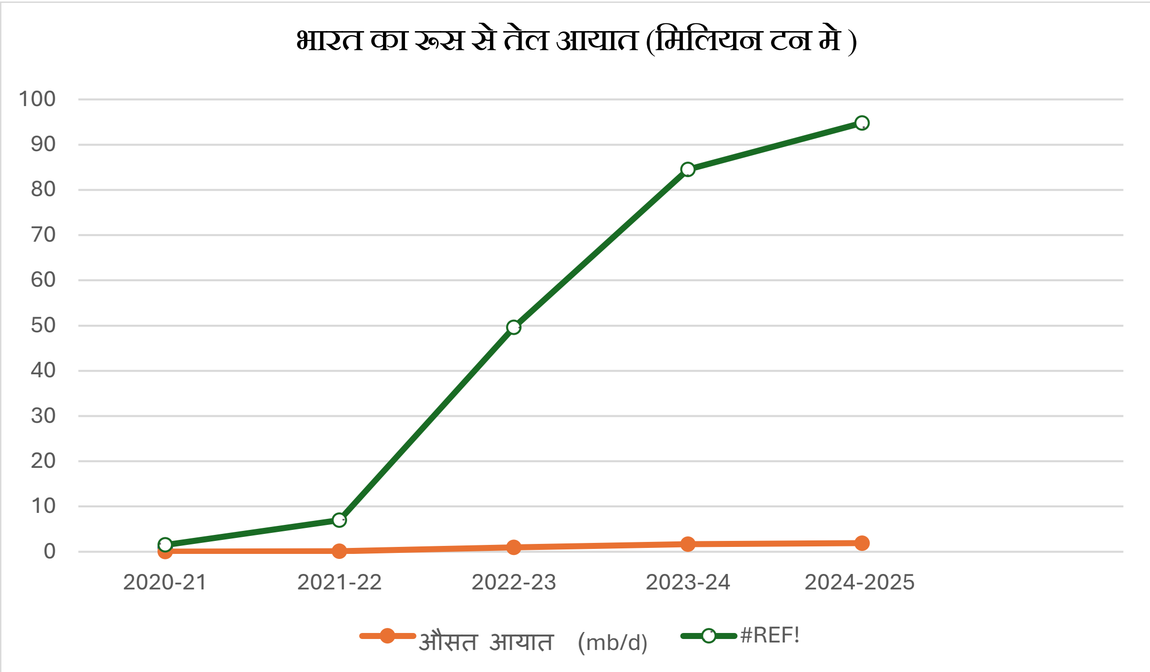


रूस से तेल आयात के साथ ही, भारत तीव्र गति से नवीकरणीय और घरेलू ऊर्जा उत्पादन के माध्यम से ऊर्जा उपलब्धता मे विविधता लाने और ऊर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत है। वर्तमान मे भारत की स्थापित नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता अब 225 गीगावॉट से अधिक है, जो अप्रैल 2025 तक कुल ऊर्जा मिश्रण का लगभग 49% है।[3] फिर भी, भारत की तेल आयात पर निर्भरता, और घरेलू उपभोक्ताओं को वैश्विक ऊर्जा के मूल्य आघातों से बचाने की आवश्यकता भारत की ऊर्जा सुरक्षा को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार राजनीति के झंझावातों मे उलझाए हुए है। अमेरिका के टैरिफ और उसकी वृद्धि का खतरा भारत के ऊर्जा सुरक्षा के साथ ही विदेश नीति दोनों के लिए एक बड़ा संकट उत्पन्न कर रहा है। हम सभी जानते हैं कि किसी देश कि विदेश नीति न केवल उसकी घरेलू आवश्यकता, वित्तीय और तकनीकी अनिवार्यताओं के साथ-साथ संप्रभुता, वैश्विक भूराजनीति की मांग से तय होती है। भारत की भी दशा इस मामले मे ऐसी ही है। गत कुछ महीनो मे वैश्विक भूराजनीतिक स्थितियाँ बहुत तेजी से बदली हैं। भारत ने अभी पाकिस्तान के विरुद्ध ऑपरेशन सिन्दूर चलाया है जिसमे न केवल अमेरिकी अपितु चीन के रक्षा उपकरणो की भी प्रभावशीलता पर प्रश्न चिन्ह लगा है। इसके बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने लगभग 24 बार भारत पाकिस्तान के मध्य चले संघर्ष को रोकने मे मध्यस्थता का दावा किया जिसे भारत ने पूर्ण रूप अस्वीकृत कर दिया। इसमे संदेह नहीं कि पूरा यूरोप और अमेरिका हमेशा अपने राष्ट्रीय हितों का बहाना देकर रूस से क्रमश: गैस और यूरेनियम खरीदते रहे है। इतना ही नहीं भारत से भी अधिक मात्रा मे रूस से तेल खरीदने वाला देश चीन है जिस पर अमेरिका टैरिफ लगा चुका है। अमेरिका और चीन हो सकता है इस बात पर समझौता कर ले कि चीन अमेरिका को दुर्लभ भू-खनिज निर्यात करता रहेगा । लेकिन भारत के पास ऐसी स्थिति मे सार्थक और सटीक निर्णय लेना कठिन होगा। अब प्रश्न उठता है कि अमेरिका के टैरिफ से भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए क्या क्या चुनौतियां उत्पन्न होंगी ?

**2**

भारत आज अपनी ऊर्जा सुरक्षा के लिए आज अमेरिकी संरक्षणवादी व्यापार नीतियों, अस्थिर वैश्विक गतिशीलता और इसके घरेलू नीति के संदर्भ में अनेक आपस मे जुड़ी हुई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। यद्यपि भारत ने अपनी नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का तेजी से विस्तार किया है लेकिन अभी भी इसकी स्थापित बिजली क्षमता का लगभग आधा भाग आयातित जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता करता है। स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकी में आपूर्ति श्रृंखला और नियामक सम्बन्धी बाधाएँ बनी हुई हैं। ग्राफ संख्या 2 मे स्पष्ट है कि ट्रम्प के टैरिफ से भारत अपनी ऊर्जा सुरक्षा के लिए कौन सी प्रमुख चुनौतियों का सामना करेगा।

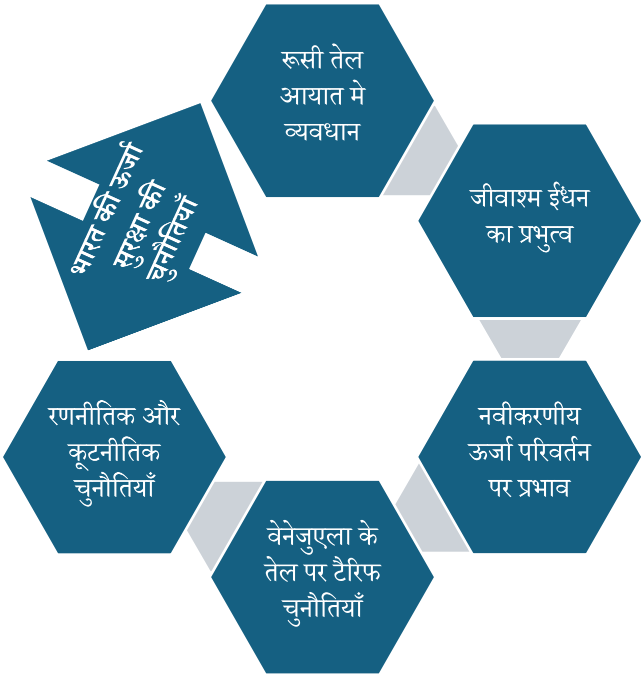


1. **रूसी तेल आयात में व्यवधान:** भारत के घरेलू ऊर्जा भंडार और उत्पादन इसकी बढ़ती मांगों के लिए या यूं कहें कि एक बड़ी और तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के लिए अपर्याप्त हैं। वैश्विक प्राथमिक ऊर्जा खपत में भारत की हिस्सेदारी 2035 तक दोगुनी होने का अनुमान है।[4] भारत इस समय रूस, मध्य पूर्व और U.S. सहित प्रमुख ऊर्जा स्रोतों के साथ कच्चे तेल, गैस और कोयले के आयात पर अत्यधिक निर्भर है। इस निर्भरता ने भारत को व्यापार व्यवधानों और आर्थिक प्रतिबंधों जैसे भू-राजनीतिक संकट के प्रति और अधिक संवेदनशील बना दिया है। भारत, विश्व का तीसरा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता है और अपनी कच्चे तेल की आवश्यकता का लगभग 85% आयात पर निर्भर करता है, जिसमें 2024-2025 में रूसी तेल का हिस्सा 35-40% है। ये आयात वैश्विक बेंचमार्क से 30% तक की छूट के साथ भारत को मिलते हैं, जो घरेलू ईंधन की कीमतों को स्थिर करने और मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में मदद करते हैं।[5] ट्रम्प का टैरिफ, जिसमें भारतीय वस्तुओं पर 25% आधारभूत टैरिफ (कुछ मामलों में 50% तक बढ़ाया जा सकता है ) और रूसी तेल खरीदने वाले देशों पर 100% द्वितीयक टैरिफ की धमकी शामिल है, भारत की कम दाम पर रूसी कच्चे तेल पर निर्भरता को सीधे लक्ष्य किया है। इस टैरिफ से भारत पर रूसी तेल आयात को कम करने या बंद करने का स्वाभाविक दबाव बनेगा। और यदि भारत अमेरिकी दबाव के कारण रूसी तेल आयात को कम करता है, तो विश्लेषकों का अनुमान है कि 1.8 मिलियन बैरल प्रति दिन पर $5 प्रति बैरल की छूट के नुकसान के कारण तेल आयात लागत में प्रतिवर्ष $9-11 बिलियन की अतिरिक्त वृद्धि होगी।[6] इसके साथ ही एक और चुनौती सामने आएगी कि मध्य पूर्व, अमेरिका या अफ्रीका जैसे वैकल्पिक आपूर्तिकर्ताओं से तेल आयात में संभारिकी संबंधी चुनौतियाँ और उच्च लागत शामिल हो सकती हैं, क्योंकि रूसी तेल भारत की रिफाइनिंग संरचना के साथ अनुकूल है।

2. **जीवाश्म ईंधन प्रभुत्व:** नवीकरणीय ऊर्जा (2025 के मध्य तक स्थापित क्षमता का लगभग 49%) में प्रगति के बाद भी भारत के बिजली क्षेत्र में अभी भी कोयले का वर्चस्व है, जो बिजली उत्पादन, रोजगार और वित्तीय स्थिरता के लिए आवश्यक है। 2024-25 मे भारत का कोयला उपभोग

**1,025.25 मीट्रिक टन** है।[7] सरकार की योजना 2032 तक कम से कम 80 गीगावाट अधिक कोयला आधारित क्षमता जोड़ने की है, जो पेरिस समझौते और शुद्ध-शून्य लक्ष्यों के अंतर्गत अपनी प्रतिबद्धताओं के विपरीत है। इसके अतिरिक्त, तेल और कोयले का एक बड़ा हिस्सा अभी भी आयात किया जाता है, जिससे भारत कि ऊर्जा सुरक्षा वैश्विक बाजारों में कीमतों के उतार-चढ़ाव और नीतिगत झटकों के प्रति संवेदनशील हो जाता है।

3. **नवीकरणीय ऊर्जा परिवर्तन पर प्रभाव:** भारत का लक्ष्य 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता और 2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन प्राप्त करना है, जो आयातित सौर उपकरणों पर काफी हद तक निर्भर करता है।[8] टैरिफ, जिसमें अमेरिका को किए जाने वाले भारतीय सौर निर्यात पर 36% टैरिफ और स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों पर जवाबी टैरिफ शामिल हैं, भारत के हरित ऊर्जा परिवर्तन को जटिल बनाएगा।[9] इसका परिणाम यह होगा कि आयातित सौर उपकरणों पर टैरिफ से घरेलू परियोजना की लागत बढ़ेगी जिससे भारत की नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार धीमा होने कि संभावना है। ध्यातव्य है कि भारतीय सौर निर्यात का एक प्रमुख बाज़ार अमेरिका है और भारत का नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र आंशिक रूप से टैरिफ से छूट प्राप्त है लेकिन अन्य वस्तुओं पर 26% टैरिफ अप्रत्यक्ष रूप से निर्माताओं की अमेरिकी बाजार में प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रभावित करेगा।[10] इस टैरिफ से भारत-अमेरिका रणनीतिक स्वच्छ ऊर्जा साझेदारी (SCEP) जैसी पहल को न केवल आघात लगा है अपितु आपसी विश्वास मे गिरावट भी जारी है।

4. **आर्थिक और व्यापारिक प्रभाव:** अमेरिका भारत का सबसे बड़ा निर्यात बाजार है, जिसमें 2024 में $86.5-91.2 बिलियन का निर्यात हुआ। ट्रम्प के टैरिफ (भारतीय वस्तुओं पर 25%) इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटो पार्ट्स और कपड़ा जैसे क्षेत्रों को निशाना बनाते हैं, जिससे अप्रत्यक्ष रूप से ऊर्जा-निर्भर उद्योग भी प्रभावित होंगे।[11] भारत का अमेरिका को निर्यात गिर सकता है। यदि ऐसा हुआ तो इससे ऊर्जा बुनियादी ढांचे के निवेश के लिए संसाधन सीमित होंगे।

5. **वेनेज़ुएला के तेल पर टैरिफ चुनौतियाँ:** भारत वेनेज़ुएला के कच्चे तेल का एक प्रमुख खरीदार है क्योंकि इसके कच्चे तेल भारत की रिफाइनरियों के अनुकूल है। ट्रम्प के वेनेज़ुएला से तेल आयात करने वाले देशों पर टैरिफ, जोकि मादुरो शासन पर दबाव डालने के लिए हैं, भारत के तेल आयात कि लागत को बढ़ा रहे हैं।[12]

6. **रणनीतिक और कूटनीतिक चुनौतियाँ:** भारत का रणनीतिक स्वायत्तता का सिद्धांत इसकी ऊर्जा खरीद और विदेश नीति को निर्देशित करता है, जो अमेरिका, रूस और अन्य के साथ संबंधों को संतुलित करता है। विश्व के प्रमुख स्नातजिक विचारकों मे ट्रम्प के टैरिफ को भारत को रूस और ईरान के साथ संबंधों को कम करके अमेरिकी हितों के साथ मिलकर काम करने के लिए दबाव बनाने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है। इससे ऊर्जा और रक्षा सहयोग को दीर्घकालिक नुकसान हो सकता है। टैरिफ भारत को BRICS राष्ट्रों या रूस- भारत-चीन के त्रिगुट बनाने पर मजबूर कर रहा है।

**3**

टैरिफ से भारत की ऊर्जा सुरक्षा के समक्ष पांच प्रमुख चुनौतियाँ (देखें : चार्ट संख्या: 3) उत्पन्न हुई हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए भारत एक बहु-आयामी दृष्टिकोण अपना रहा है। भारत इन चुनौतियों से निपटने के लिए ऊर्जा स्रोतों मे विविधता, साथ ही वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों से जुड़े घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देना, अपने निर्यात कि वस्तुओं के लिए नए बाज़ार खोजना, अमेरिका से कूटनीतिक वार्ता को जारी रखते हुए अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखने के विकल्प उपलब्ध हैं जिनको विस्तार से समझा जा सकता है।

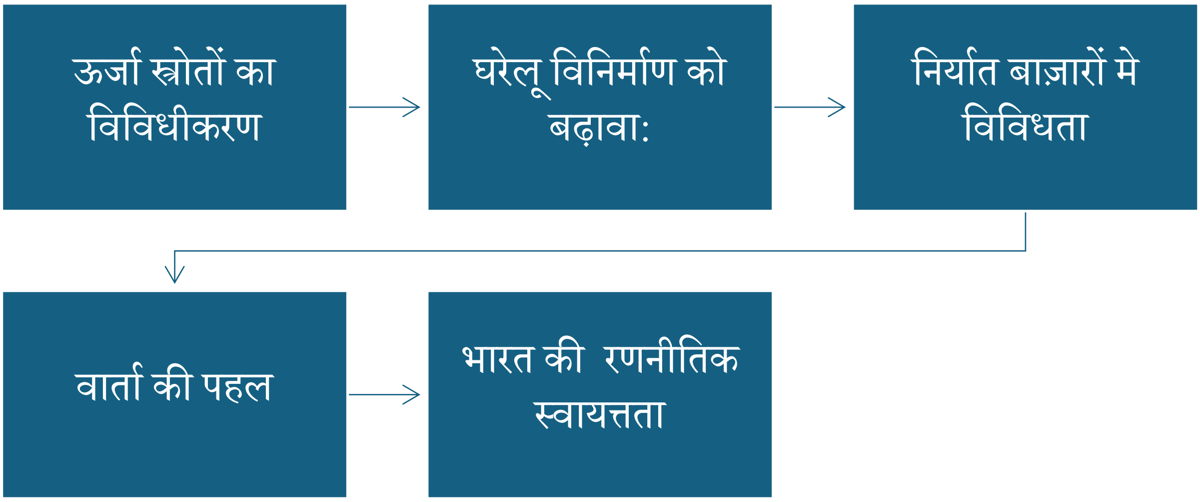


1. **ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण:** भारत रूस पर निर्भरता कम करने के लिए सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, इराक, और नाइजीरिया जैसे देशों से तेल आयात बढ़ा सकता है। उदाहरण के लिए, भारत ने कतर एनर्जी के साथ 2028 से शुरू होने वाले 20-वर्षीय LNG सौदे पर हस्ताक्षर किए हैं, जो दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करेगा।[13] हालांकि, इन स्रोतों से तेल आयात महंगा हो सकता है, जिससे लागत बढ़ेगी। भारत को ऐसे समझौते करते समय दीर्घकालिक अनुबंधों पर ध्यान देना चाहिए ताकि आपूर्ति स्थिर रहे। भारत हिंद-प्रशांत क्षेत्र में जलवायु कूटनीति में नेतृत्व ले सकता है। वियतनाम और इंडोनेशिया के साथ स्वच्छ ऊर्जा साझेदारियाँ स्थापित करके कूटनीतिक पहल को आगे बढ़ा सकता है। यद्यपि यह उसकी कूटनीतिक परीक्षा होगी कि कैसे वह अपनी चुनौतियों को अवसर मे बदलेगा। यह अमेरिकी टैरिफ के प्रभाव को संतुलित करने में मदद करेगा। भारत रूस के साथ वैकल्पिक व्यापार व्यवस्थाओं जैसे रुपये-रूबल भुगतान प्रणाली को बढ़ावा दे सकता है। इससे अमेरिकी प्रतिबंधों और टैरिफ के प्रभाव मे कमी आएगी। यद्यपि यह प्रणाली पहले से उपयोग में है और इसे और मजबूत किया जा सकता है ताकि रूसी तेल आयात की लागत कम रहे।

2. **घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा:** आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत, भारत सौर पैनल और अन्य नवीकरणीय ऊर्जा उपकरणों के स्थानीय उत्पादन को बढ़ा सकता है। इस अभियान के माध्यम से सब्सिडी और प्रोत्साहन प्रदान करके आयात निर्भरता कम की जा सकती है। भारत यूरोपीय संघ, जापान, या दक्षिण कोरिया जैसे देशों से सौर उपकरण आयात कर सकता है ताकि अमेरिकी टैरिफ के प्रभाव को कम किया जाए। इन देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौतों (FTAs) को तेज करना इस दिशा में सहायक होगा भारत नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश बढ़ा सकता है, जैसे सौर और पवन ऊर्जा, ताकि आयातित तेल पर निर्भरता कम हो। सरकार पहले से ही राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन और बायो-एथेनॉल परियोजनाओं को बढ़ावा दे रही है, जिन्हें और तेज किया जा सकता है।[14]

3. **निर्यात बाज़ारों मे विविधता :** अमेरिका भारत का सबसे बड़ा निर्यात बाजार है इसलिए ये टैरिफ भारत की आर्थिक स्थिरता पर दबाव उत्पन्न करेंगे। भारत को अपने निर्यात बाज़ारों मे भी विविधता लाने का प्रयास करना होगा। यूरोपीय संघ, ब्रिटेन, ASEAN, और अफ्रीकी देशों के साथ व्यापार बढ़ाकर अमेरिकी बाजार पर निर्भरता कम कर सकता है। उदाहरण के लिए, यूके के साथ मुक्त व्यापार समझौता एक मॉडल हो सकता है। यद्यपि, इन बाजारों में कम लाभ मार्जिन चुनौतीपूर्ण हो सकता है। एक विकल्प ये होगा कि भारत अमेरिकी वस्तुओं, जैसे कृषि उत्पाद (बादाम और सेब आदि ), फार्मास्यूटिकल्स, और तकनीकी उपकरणों पर जवाबी टैरिफ लगाए। 2019 में भारत ने इसी तरह के टैरिफ लगाए थे, जो प्रभावी रहे।[15] इससे अमेरिकी उत्पाद भारतीय बाजार में महंगे होंगे, जिससे दबाव बन सकता है। इसके साथ ही सरकार टेक्सटाइल, ज्वेलरी, और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों में निर्यातकों को और अधिक सब्सिडी देकर राहत प्रदान कर सकती है।

4. **वार्ता की पहल:** ट्रम्प के टैरिफ और भारत की रूसी तेल खरीद की आलोचना ने भारत-अमेरिका संबंधों में तनाव पैदा किया है। भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और BRICS/SCO जैसे मंचों में भागीदारी को अमेरिका "अमेरिका-विरोधी" मानता है, जिससे गत कुछ महीनो मे दोनों देशों के संबंधो मे विश्वास की कमी आई है।[16] इसके विकल्प मे भारत को अमेरिका के साथ व्यापार वार्ताओं को तेज करना चाहिए। 25-30 अगस्त, 2025 को नई दिल्ली में अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधिमंडल का दौरा एक व्यापक व्यापार समझौते का अवसर प्रदान करेगा। भारत गैर-संवेदनशील क्षेत्रों (जैसे

मशीनरी, सोयाबीन) में रियायतों की मांग कर सकता है। भारत को अमेरिकी कांग्रेस और सीनेट में अपने हितों के लिए लॉबिंग बढ़ानी चाहिए ताकि भारत-विरोधी प्रस्तावों को रोका जा सके।

5. **भारत की रणनीतिक स्वायत्तता:** भारत विश्व व्यापार संगठन (WTO) में टैरिफ को भेदभावपूर्ण बताकर, यह तर्क देते हुए कि यह सबसे पसंदीदा राष्ट्र (MFN) सिद्धांत का उल्लंघन करता है, चुनौती दे सकता है। भारत BRICS और G20 जैसे मंचों पर समर्थन जुटाकर इस मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उठा सकता है। भारत BRICS, SCO, और G20 जैसे मंचों के माध्यम से रूस, चीन, और अन्य सहयोगियों के साथ संबंधों को मजबूत कर सकता है। भारत की रणनीतिक स्वायत्तता का उद्देश्य केवल इतना है कि अमेरिका और रूस/चीन से अपने सम्बन्धों के बीच संतुलन बनाया जा सके। उक्त कदम वैश्विक ध्रुवीकरण के दौर में भारत की रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखने मे सहयोग करेंगे।

उक्त सभी स्थितियों के विश्लेषण के बाद यह स्पष्ट है कि ट्रम्प के टैरिफ भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए बहुआयामी चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे निकट भविष्य मे तेल आयात लागत में वृद्धि, नवीकरणीय ऊर्जा प्रगति में व्यवधान, और आर्थिक और कूटनीतिक संबंधों में तनाव आदि का सामना भारत करने वाला है। इसके साथ ही रूसी और वेनेजुएला के तेल पर निर्भरता, भारत के महत्वाकांक्षी नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों के साथ मिलकर, इसे अमेरिकी व्यापार नीतियों के प्रति संवेदनशील बना रही है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए, भारत की रणनीतिक प्रतिक्रियाएँ, कूटनीति, तेल आयात और अपने निर्यात बाज़ारों मे विविधता लाने के प्रयास, ऊर्जा क्षेत्र मे आत्मनिर्भरता के प्रयास लाभकारी होंगे। यद्यपि दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण निर्णय और प्रयास और रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए अपनी ऊर्जा आपूर्ति बनाए रखना बड़ी चुनती होगी। भारत की कूटनीतिक दक्षता यही होगी कि इस बदलती परिस्थिति मे अपनी ऊर्जा सुरक्षा को बनाए रखते हुए आगे बढ़े और विश्व के देशों विशेषकर अमेरिका और रूस के साथ अपने सम्बन्धों को बनाए रखने मे सफल रहे। यद्यपि यह एक कठिन कार्य होगा और भारत के इस दिशा मे उठाए जाने वाले कदम इसमे सफलता और असफलता को तय करेंगे।

## सन्दर्भ:


1. Oil for India | The National Bureau of Asian Research (NBR). (n.d.). https://www. nbr.org/publication/oil-for-india/
2. Jayaswal, R. (2024, May 13). India saved $25 billion by importing Russian crude oil: Ministry data - Hindustan Times. Hindustan Times. https://www.hindustantimes.com/

   business/india-saved-25-billion-by-importing-russian-crude-oil-ministry-data-101715578085694.html
3. India - Renewable energy. (2024, January 12). International Trade Administration | Trade.gov. https://www.trade.gov/country-commercial-guides/india-renewable-energy
4. PIB Headquarters. (2024). https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?id=15 4717&NoteId=154717&ModuleId=3
5. Choudhary, S. (2024, May 3). "दोस्त" रूस ने भारत के लिए फिर खोली तेल की टंकी, अप्रैल में रेकॉर्ड के करीब पहुंच गया इम्पोर्ट. Navbharat Times. https://navbharattimes.indiatimes.com/ business/commodity/share-of-russian-crude-in-indias-imports-rises-to-nearly-40-percent-in-april/articleshow/109805082.cms
6. PIB Headquarters. (n.d.). https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?id= 154717&NoteId=154717&ModuleId=3
7. India's renewable energy capacity hits new milestone https://www.pib.gov.in/ PressRelease IframePage.aspx?PRID=2073038
8. The Hindu Business Line. (2025). Trump tariffs threaten India's renewables push. https://www.thehindubusinessline.com/opinion/trump-tariffs-threaten-indias-renewables-push/article69622260.
9. Mishra, V. (2025, June 9). Trump's energy gambit: Implications for India. https://www.orfonline.org/expert-speak/trump-s-energy-gambit-implications-for-india
10. Krishnan, M. (2025). How can US-India ties recover from Trump's tariff threats? dw.com. https://www.dw.com/en/how-can-us-india-ties-recover-from-trumps-tariff-threats/a-73534764

11. Omondi. (2025, March 25). India's energy challenges under Trump's Venezuelan oil tariffs. East Africa Digest. https://eastafricadigest.com/indias-energy-challenges-under-trumps-venezuelan-oil-tariffs/
12. डोनाल्ड ट्रम्प की नई धमकी, वेनेजुएला से तेल खरीदने वाले देशों पर 25 % अतिरिक्त टैरिफ. (2025, March 25). जनसत्ता. https://www.jansatta.com/business/donald-trump-threatens-25-percent-extra-duty-on-venezuelan-oil-buyers-new-us-tariff-impact-worrying-india/3889602/
13. Mishra, V. (2025, June 9). Trump's energy gambit: Implications for India. orfonline.org. https://www.orfonline.org/expert-speak/trump-s-energy-gambit-implications-for-india
14. Sharma, Y. (2025, April 22). Vance visit: What's at stake for India-US trade amid Trump tariff threat? Al Jazeera. https://www.aljazeera.com/news/2025/4/22/vance-visit-whats-at-stake-for-india-us-trade-amid-trump-tariff-threat
15. Evan A. Feigenbaum, Donald Trump risks tanking Twenty-Five years of U.S.-India relations. Carnegie Endowment for International Peace. https://carnegieendowment.org/emissary/2025/08/trump-tariffs-risk-us-india-relations ?lang=en